SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 2

भारत में राष्ट्रवाद

भाग - 3

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. रिवलाफत आंदोलन की शुरुआत किसके द्वारा हुई ?

a) अली बन्धु
b) मो. सादुल्लाह
c) सैयद अहमद खां
d) उपर्युक्त मे से कोई नहीं

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

असहयोग आंदोलन → सरकार के प्रति असहयोग।



चरण

I
- सरकार की पदवियां लौटाई गई
- सरकारी नौकरी
- विदेशी वस्तुओं
- पुलिस, सेना का बहिष्कार

II
यदि सरकार दमन
↓
सविनय अवज्ञा

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

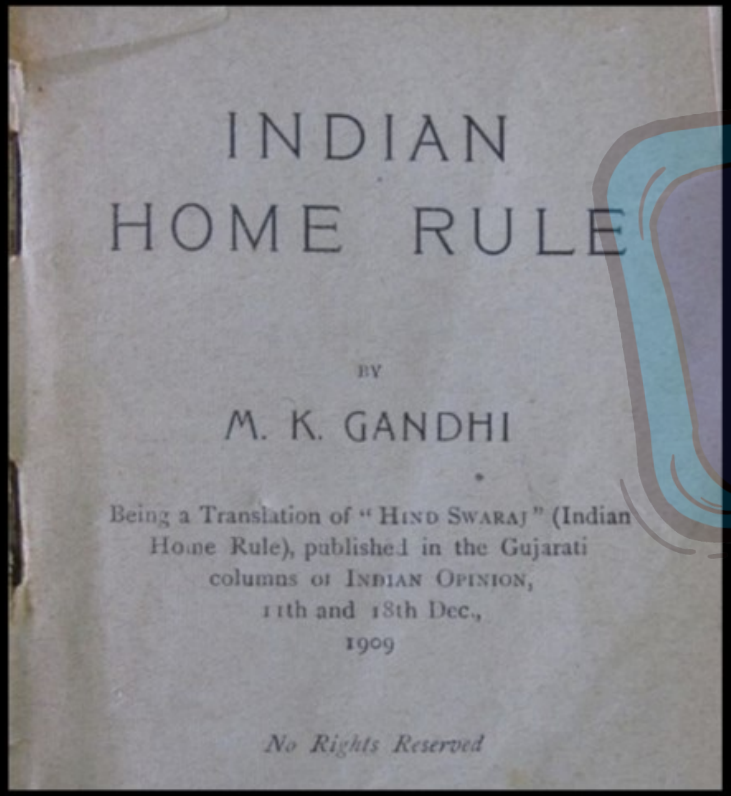
INDIAN
HOME RULE

BY

M. K. GANDHI

Being a Translation of "HIND SWARAJ" (Indian Home Rule), published in the Gujarati columns of INDIAN OPINION, 11th and 18th Dec., 1909

No Rights Reserved

असहयोग ही क्यों?

- गांधी जी ने असहयोग आंदोलन का रास्ता क्यों चुना?
- अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज (1909) में गांधी जी ने कहा था कि – भारत में ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से ही स्थापित हुआ था तथा यह शासन इसी सहयोग से चल रहा था। अगर भारत के लोग अपना सहयोग वापस ले लें तो साल भर के भीतर ही ब्रिटिश शासन ढह जायेगा और स्वराज की स्थापना हो जायेगी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- गांधी जी का सुझाव था कि आंदोलन चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ना चाहिए।

प्रथम चरण :-

- लोगों को सरकार द्वारा दी गई पदवियाँ लौटा देनी चाहिए।
- सरकारी नौकरियों, सेना, पुलिस, अदालतों, विधायी परिषदों, स्कूलों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहिए।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

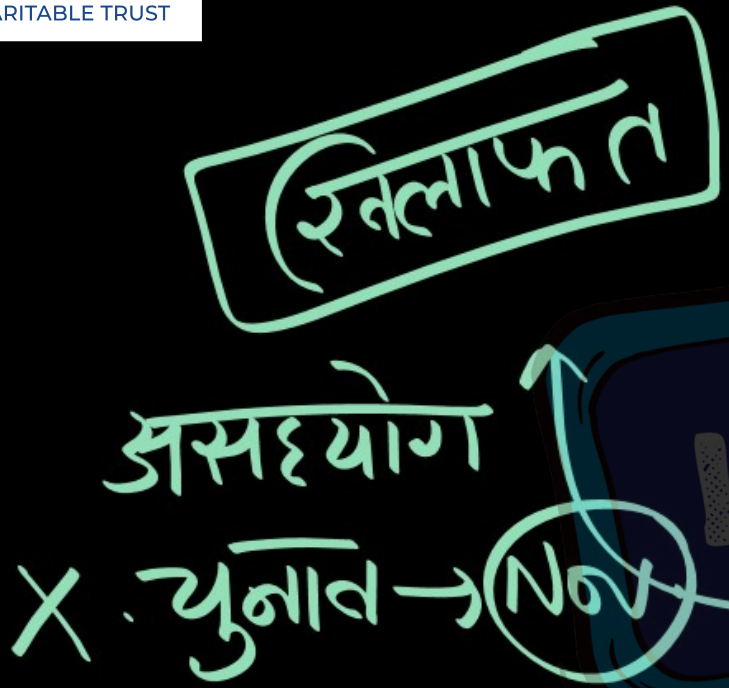

दूसरा चरण :-

- यदि सरकार दमन का रास्ता अपनाती हैं तो व्यापक सविनय अवज्ञा आंदोलन भी शुरू किया जाये।
- 1920 की गर्मियों में गांधी जी और शौकत अली आंदोलन के लिए समर्थन जुटाते हुए देश भर में यात्राऐं करते रहे।
- कांग्रेस के बहुत सारे लोग प्रथम चरण में लिये गये असहयोग के प्रस्तावों से सशंकित थे।
- वे नवम्बर 1920 में विधायी परिषद के लिए होने वाले चुनावों का बहिष्कार करने से हिचकिचा रहे थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

असहयोग ✗ ✓



- उन्हें यह भी डर था कि इस आंदोलन में लोग हिंसा कर सकते हैं।
- सितम्बर से दिसम्बर तक कांग्रेस में भारी खींचतान चलती रही।
- कुछ समय तक ऐसा लगा कि आंदोलन के समर्थकों और विरोधियों के बीच सहमति नहीं बन पायेगी।
- आखिरकार दिसम्बर – 1920 में कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में एक समझौता हुआ और असहयोग कार्यक्रम पर स्वीकृति की मोहर लगा दी गयी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

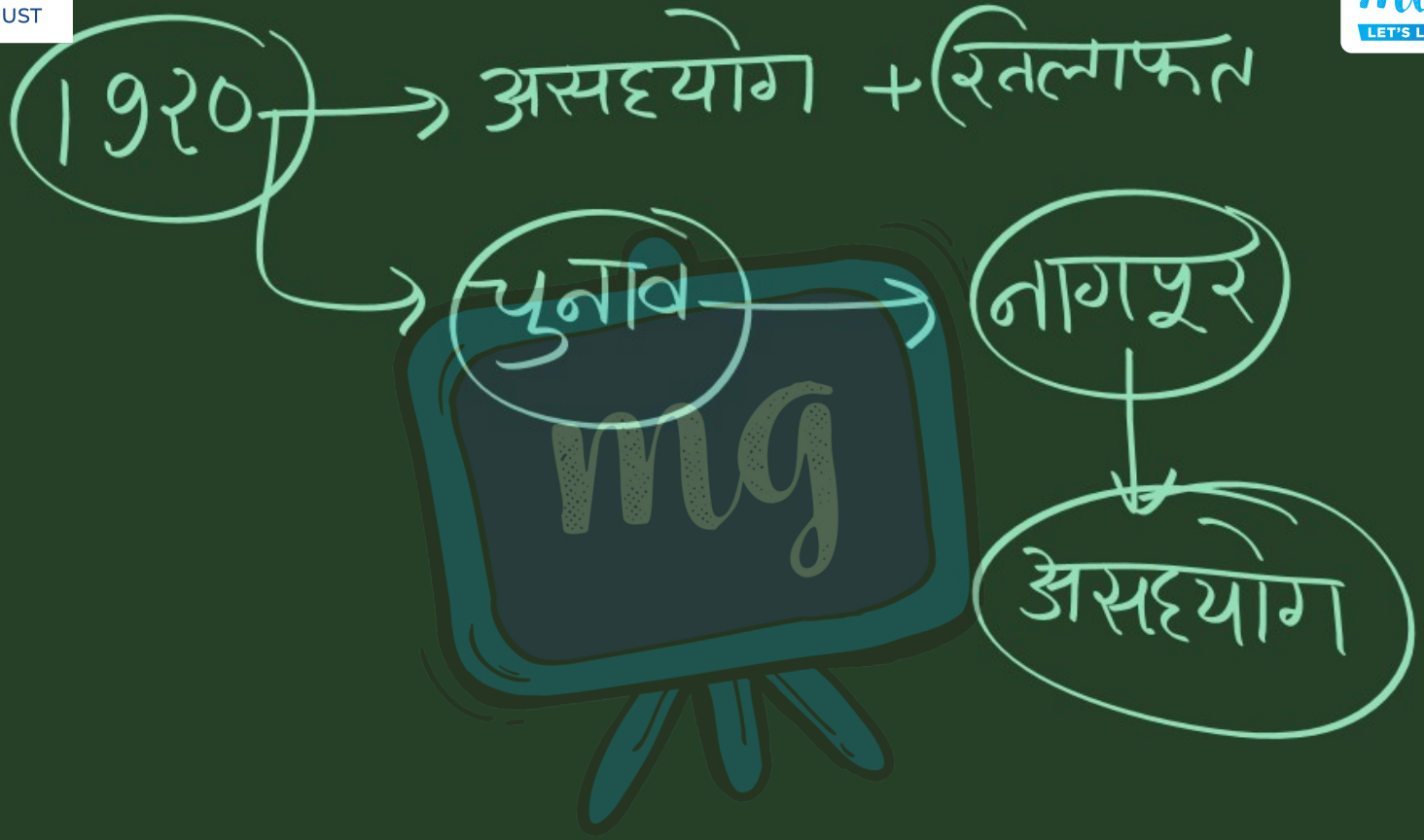

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



स्वतन्त्रता

आंदोलन के भीतर अलग-अलग धाराऐं :

- असहयोग खिलाफत आंदोलन जनवरी 1921 में शुरू हुआ।
- इस आंदोलन में विभिन्न सामाजिक समूहों ने भाग लिया क्योंकि हरेक की अपनी-अपनी आकांक्षाऐं थी।
- सभी के लिए स्वराज के अर्थ भी अलग अलग थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



शहरों में आंदोलन :-

- आंदोलन की शुरूआत शहरी मध्यवर्ग की हिस्सेदारी के साथ हुई।
- हजारों विद्यार्थियों में स्कूल-कॉलेज छोड़ दिये।
- हैडमास्टरों और शिक्षकों ने इस्तीफे सौंप दिये।
- वकीलों ने मुकदमें लड़ना बंद कर दिया।
- मद्रास के अलावा ज्यादातर प्रांतों में परिषद चुनावों का बहिष्कार किया गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चुनाव

मद्रास में गैर ब्राह्मणों द्वारा बनाई गई जस्टिस पार्टी का मानना था कि काउंसिल में प्रवेश के जरिए उन्हें वे अधिकार मिल सकते हैं जो सामान्य रूप से केवल ब्राह्मणों को मिल पाते हैं, इसलिए इस पार्टी ने चुनावों का बहिष्कार नहीं किया।

आर्थिक असहयोग (दूसरा)

- सामानों का बहिष्कार
- दुकानों की पिकेटिंग
- कपड़ों की होली

आर्थिक मोर्चे पर असहयोग का असर और भी ज्यादा नाटकीय रहा।

1. विदेशी सामानों का बहिष्कार किया गया।
2. शराब की दुकानों की पिकेटिंग की गई।

पिकेटिंग :- विरोध करते हुए दफ्तर व दुकानों में अंदर जाने का रास्ता रोक लेते हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



3. विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाने लगी।
- 1921–22 के बीच विदेशी कपड़ों का आयात आधा रह गया था। जो 102 करोड़ से घटकर 57 करोड़ रह गया।
- बहुत सारे व्यापारियों ने विदेशी चीजों का व्यापार करने तथा विदेशी व्यापार में पैसा लगाने से इकार कर दिया।
- बहिष्कार आंदोलन के फैलने से तथा भारतीय कपड़े पहनने से भारतीय कपड़ा मिलों और हथकरघों का उत्पादन भी बढ़ने लगा।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

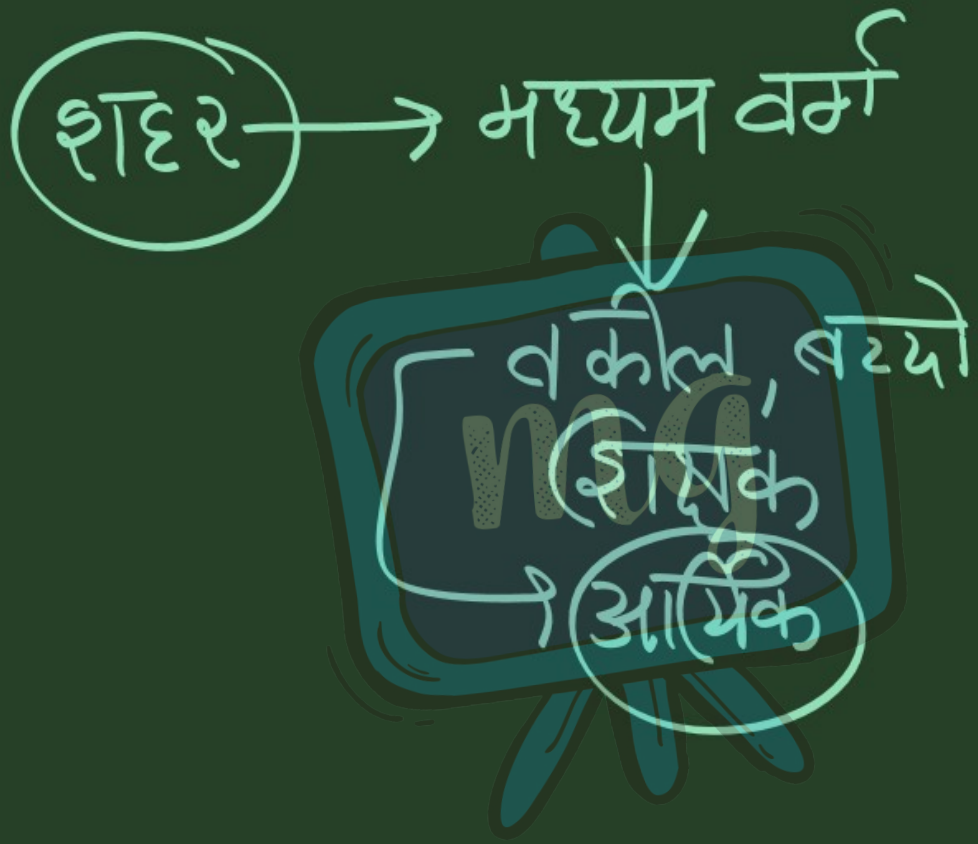

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

शहरों ↓
1. ब्रिटेन - सस्ता ✓
2. संस्था। (कमी)

आंदोलन में कमी :-

- कुछ समय बाद शहरों में यह आंदोलन धीमा पड़ने लगा।
- ब्रिटेन की मिलों का कपड़ा यहां की खादी के कपड़े से सस्ता होता था। अतः गरीब खादी कैसे खरीदते? वे मिलों के कपडे का लम्बे समय तक बहिष्कार कैसे करते?
- ब्रिटिश संस्थानों (स्कूल, कॉलेज, कोर्ट) के बहिष्कार से भी समस्या पैदा हो गयी।
- आंदोलन तब कामयाब होता जब ब्रिटिश संस्थानों के वैकल्पिक भारतीय संस्थान की पहले ही स्थापना की जाती।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लेकिन वैकल्पिक संस्थानों के स्थापना की प्रक्रिया बहुत धीमी थी।
- फलस्वरूप विद्यार्थी और शिक्षक सरकारी स्कूलों में लौटने लगे और वकील दोबारा सरकारी अदालतों में दिखाई देने लगे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

गांवों

शहरों → ग्रामीण

किसान

समस्या

- भारी लगान
- बेगार
- पट्टे बदल दिये

मांग

- लगान कम
- बेगार खत्म
- जमीदार का बहिष्कार

सामाजिक बहिष्कार

समस्या

गांवों

1920

जवाहरलाल नेहरू

+

बाबा रामचन्द्र

↓

किसान सभा

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

✓ JLN + बाबा + अन्य

किसान सभा → 300+ शाखा → कॉंग्रेस ने इन्हें असहयोग आंदोलन में शामिल करने का प्रयास



तालुकदारों पर हमले

आंदोलन में लूट पाट

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

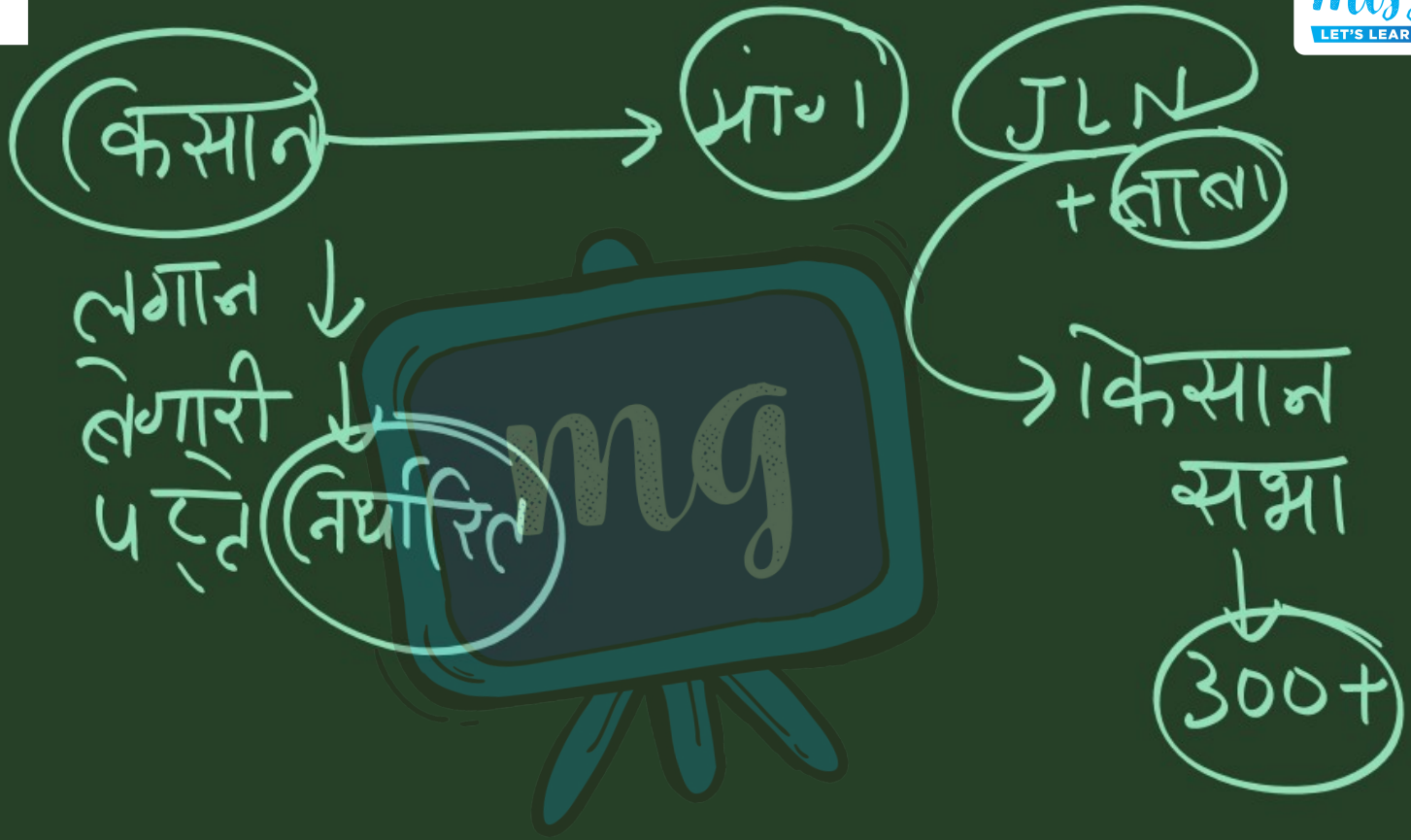

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जनजातिय

आंध्र प्रदेश की गूडेम पहाड़ियों में आंदोलन:-

- 1920 के दशक में आंध्र प्रदेश की गूडेम पहाड़ियों के आदिवासी किसानों ने एक उग्र गुरिल्ला आंदोलन छेड़ दिया।
- कांग्रेस इस तरह के संघर्ष को कभी स्वीकार नहीं कर सकती थी।
- अन्य वन्य क्षेत्रों की तरह यहां भी अंग्रेजी सरकार ने जंगलों में लोगों को दाखिल होने पर पाबंदी लगा रखी थी।
- लोग इन जंगलों में न तो मवेशियों को चरा सकते थे और न ही जलाने के लिए लकड़ी तथा फल बीन सकते थे।
- इससे पहाड़ों के लोग परेशान और गुस्सा थे।
- न केवल उनकी रोजी-रोटी पर असर पड़ रहा था बल्कि उनके परंपरागत अधिकार भी छीने जा रहे थे।
- जब सरकार ने उन्हें सड़कों के निर्माण के लिए बेगार करने पर मजबूर किया तो लोगों ने बगावत कर दी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जनजातिय



- इनका नेतृत्व करने वाले अल्लूरी सीताराम राजू एक दिलचस्प व्यक्ति थे।
- उनका दावा था कि उनके पास बहुत सारी विशेष शक्तियां हैं –
  (i) वह सटीक खगोलीय अनुमान लगा सकते हैं।
  (ii) लोगों को स्वस्थ कर सकते हैं तथा गोलियां भी इन्हें नहीं मार सकतीं।
- राजू के व्यक्तित्व से चमत्कृत लोगों को लगता था कि वह ईश्वर का अवतार है।
- राजू महात्मा गांधी की महानता के गुण गाते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उनका कहना था कि वे असहयोग आंदोलन से प्रेरित हैं।
- उन्होंने लोगों को खादी पहनने तथा शराब छोड़ने के लिए प्रेरित किया।
- उनका यह भी दावा था कि भारत अहिंसा के बल पर नहीं बल्कि केवल बल प्रयोग के जरिये ही आजाद हो सकता है।
- गूडेम विद्रोहियों ने पुलिस थानों पर हमले किये, ब्रिटिश अधिकारियों को मारने की कोशिश की और स्वराज प्राप्ति के लिए गुरिल्ला युद्ध चलाते रहे।
- 1924 में राजू को फांसी दे दी गई। राजू अपने लोगों के बीच लोकनायक बन चुके थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

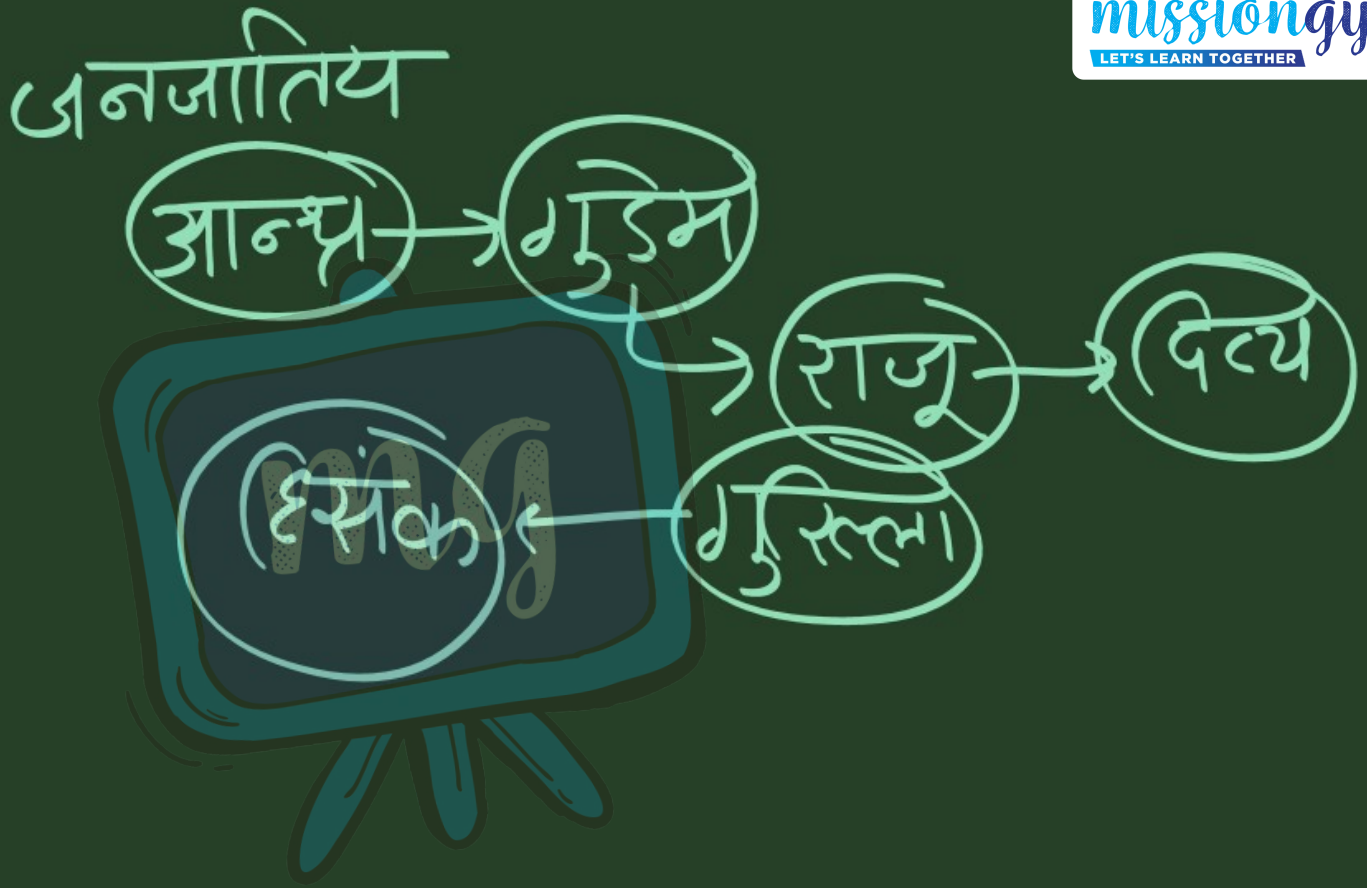

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

...न मे स्वराज



आजादी के मायने
↓
बागान की चारदीवारी से बाहर जाना!

→ 1859 इनलैण्ड इम्मिग्रेशन एक्ट
↓
बाहर नहीं जाने की इजाज़त
↓
असहयोग आंदोलन
↓
बागान छोड़ जाने लगे

लोग

- जमीन मिलेगी
- गांधी राज आ जाया!

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस प्रकार से असहयोग आंदोलन एक इलाके तक ही सीमित न रहकर सभी जगह फैल गया।
- अन्ततः 1922 में गोरखपुर में चौरी-चौरा में बाजार से गुजर रहे शांतिपूर्ण जुलूस तथा पुलिस के बीच हिंसक टकराव होने के कारण महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को रोकने का आह्वान किया।